

27-02-2026

हिन्दुस्तान

‘क्षेत्रीय भाषाओं पर खतरे को अनदेखा न करें’

रांची, चरिय संवाददाता। अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस पर सीयूजे में ‘मदर्स टैंग्स इन द एरा ऑफ ग्लोबलाइजेशन : चैलेंजेज एंड पॉसिबिलिटी’ विषय पर दो दिनी संगोष्ठी हुई। अंग्रेजी अध्ययन विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ सुधांशु शेखर ने अतिथियों का स्वागत करते हुए मातृभाषा को मां की भाषा बताया।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय क्षेत्रीय कला केंद्र (आईजीएनसीए) रांची के क्षेत्रीय निदेशक डॉ कुमार संजय झा ने स्थानीय एवं जनजातीय भाषाओं के संरक्षण पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि वैश्वीकरण जरूरी है। लेकिन इसके कारण क्षेत्रीय भाषाओं पर बढ़ते खतरे को नजर अंदाज नहीं किया जा सकता। उन्होंने तकनीक, नीतिगत पहल और शैक्षणिक संस्थानों के माध्यम से मातृभाषाओं को सशक्त करने का आह्वान किया।

मातृभाषा सपनों की भाषा : मुख्य



सीयूजे में गुरुवार को मातृभाषा दिवस पर कार्यशाला का शुभारंभ करते शिक्षाविद।

वक्ता डॉ सत्यकेतु संकृत ने कहा कि मातृभाषा सपनों की भाषा होती है, क्योंकि व्यक्ति स्वयं भी अपनी मातृभाषा में देखता है। उन्होंने अंग्रेजी को अर्जेंट भाषा बताते हुए स्थानीय भाषाओं की उपेक्षा न करने

की सलाह दी। प्रख्यात साहित्यकार महादेव टोप्पो बोले, कोई भी भाषा छोटी या बड़ी नहीं होती, बल्कि सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियां उसकी स्थिति तय करती हैं। सेंट जेवियर्स कॉलेज के पूर्व हिंदी

- अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस पर सीयूजे में संगोष्ठी आयोजित
- ‘मदर्स टैंग्स इन द एरा ऑफ ग्लोबलाइजेशन : चैलेंजेज एंड पॉसिबिलिटी’ विषय पर संगोष्ठी
- शैक्षणिक संस्थानों के जरिये मातृभाषाओं को सशक्त बनाने पर दिया गया जोर
- तकनीक, नीतिगत पहल के माध्यम से मातृभाषाओं को सशक्त करने का आह्वान

विभागाध्यक्ष डॉ कमल बोस ने मातृभाषा को स्नेह और सामर्थ्य की भाषा बताते हुए युवाओं में अपनी भाषा के प्रति आत्मविश्वास और गौरव की भावना विकसित करने पर बल दिया।

हिन्दुस्तान

28-02-2026

‘भाषा संरक्षण को डिजिटल दस्तावेजीकरण जरूरी’

रांची। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र द्वारा आयोजित दो दिवसीय संगोष्ठी के दूसरे दिन शुक्रवार को ‘वैश्वीकरण के दौर में मातृभाषाएं’ विषय पर गहन चर्चा हुई। मुख्य वक्ता वर्तमान विवि के पूर्व प्राध्यापक प्रो. अरुण घोष ने प्राकृतिक आपदाओं, पलायन और प्रभावशाली भाषाओं के वर्चस्व को भाषाई क्षरण का मुख्य कारण बताया। उन्होंने कहा कि रोजगार के लिए होने वाला विस्थापन

मूल भाषाओं को हाशिए पर धकेल देता है। जेएनयू के हरिमाधव राय ने भाषा संरक्षण के लिए सकारात्मक दृष्टिकोण। एसआरएम इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी के महेश एम व सीयूजे के प्रो. एम. रामाकृष्णन रेड्डी ने भी संबोधित किया। संगोष्ठी में 60 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया और 10 शोधार्थियों ने अपने शोधपत्र प्रस्तुत किए।

११. निष्कर्ष आगारण

भाषा हमें दुनिया को
अपने दृष्टिकोण से
देखने की देती है समझ

जास, रांची: इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, क्षेत्रीय केंद्र रांची एवं केंद्रीय विश्वविद्यालय झारखंड के अंग्रेजी अध्ययन विभाग द्वारा दो दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर, अंग्रेजी अध्ययन विभाग के सहायक प्राध्यापक डा. सुशान्त शेरन ने मातृभाषा को मां की भाषा बताते हुए कहा कि यह हमें दुनिया को अपने दृष्टिकोण से देखने की समझ देती है।

उन्होंने सांकेतिक भाषा के प्रति संवेदनशीलता व्यक्त की। इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र, रांची वे क्षेत्रीय निदेशक डा. कुमार सिंह झा ने अंतराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के महत्व पर जोर देते हुए कहा कि वैश्वीकरण की आवश्यकता है, किंतु स्थानीय एवं आदिवासी भाषाओं पर बढ़ता संकट गंभीर चिंता का विषय है। मुख्य वक्ता डा. सत्येन्द्र सांकृत ने मातृभाषा को सपनों की भाषा बताया और कहा कि केवल वैश्विक भाषा अपनाना घातक है।

उन्होंने मातृभाषा के संवर्धन के लिए नई शिक्षा नीति के कदमों का उल्लेख किया। सांख्यिकी विभाग के प्रो. पांडा ने मातृभाषा की अभिव्यक्तिगत शक्ति पर बल दिया।